भारत-कनाडा संबंधों पर खालिस्तान का प्रभाव

प्रिलिम्स के लिये:

भारत-कनाडा संबंधों पर खालिस्तान का प्रभाव, खालिस्तानी आंदोलन, ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984), सिख उग्रवाद, कट्टरवाद

मेन्स के लिये:

भारत-कनाडा संबंधों पर खालिस्तान का साया, द्विपक्षीय संबंधों पर इसका प्रभाव।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत और कनाडा के बीच तनाव तब बढ़ गया जब कनाडा के प्रधानमंत्री ने जून 2023 में सरे में भारत द्वारा आतंकवादी के रूप में नामित एक खालिस्तानी नेता की हत्या में भारत की संलिप्तता का आरोप लगाया।

भारत ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कनाडा पर खालिस्तानी चरमपंथियों को पनाह देने का आरोप लगाया।

खालिस्तान आंदोलन:

- खालिस्तान आंदोलन वर्तमान पंजाब (भारत और पाकिस्तान दोनों) में **एक पृथक, संप्रभु सिख राज्य** की लड़ाई है।
- यह मांग **कई बार उठती रही है**, सबसे प्रमुख रूप से वर्ष 1970 और वर्ष 1980 के दशक में हिंसक विद्रोह के दौरान जिसने **पंजाब को एक दशक से अधिक समय तक पंगु बना दिया था।**
- ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984) और ऑपरेशन ब्लैक थंडर (वर्ष 1986 एवं वर्ष 1988) के बाद भारत में इस आंदोलन को कुचल दिया गया था, लेकिन इसने सिख आबादी के कुछ वर्गों, विशेषकर **कनाडा, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में सिख प्रवासी लोगों के बीच सहानुभूति और समर्थन जारी रखा है।**

कनाडा में हाल की भारत विरोधी गतिविधियाँ:

- **हालिया भारत विरोधी गतिविधियाँ:**
  - **ऑपरेशन ब्लूस्टार वर्षगाँठ परेड (जून 2023)**: ब्रैम्पटन, ओंटारियो में आयोजित एक परेड में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या का जश्न मनाया गया, जिसमें खून से सना हुआ एक चित्र प्रदर्शित किया गया और दरबार साहिब पर हमले का बदला लेने का समर्थन किया गया।
  - **खालिस्तान समर्थक जनमत संग्रह (2022)**: खालिस्तान समर्थक संगठन सिख फॉर जस्टिस (SFJ) ने ब्रैम्पटन में खालिस्तान पर एक तथाकथित "जनमत संग्रह" आयोजित किया, जिसमें महत्त्वपूर्ण समर्थन का दावा किया गया।
  - **साँझ सवेरा पत्रिका (2002):** वर्ष 2002 में टोरंटो स्थित पंजाबी भाषा की साप्ताहिक पत्रिका साँझ सवेरा ने **इंदिरा गांधी की हत्या का जश्न मनाते हुए** ज़िम्मेदार व्यक्तियों का महिमामंडन करते एक कवर चित्रण के साथ उनकी मृत्यु की सालगिरह की बधाई दी।
  - पत्रिका को सरकारी विज्ञापन मिले और अब यह कनाडा का एक प्रमुख दैनिक समाचार पत्र है।
- **ऐसी गतिविधियों पर भारत की चिंताएँ:**
  - कनाडा स्थित भारतीय राजनयिकों ने कई अवसरों पर कहा है कि **"सिख उग्रवाद" से निपटने** में कनाडा की विफलता और खालिस्तानियों द्वारा भारतीय राजनयिकों तथा अधिकारियों का लगातार उत्पीड़न, **विदेश नीति का एक प्रमुख तनाव बिंदु है।**
  - भारतीय प्रधानमंत्री ने नई दिल्ली में G20 शिखर सम्मेलन **के मौके पर कनाडा के प्रधानमंत्री से कनाडा में सिख विरोध प्रदर्शन** के विषय में कड़ी चिंता जताई।
  - कनाडा ने **भारत के साथ प्रस्तावित व्यापार संधि** पर बातचीत रोक दी है।

खालिस्तानी कट्टरवाद भारत-कनाडा संबंधों प्रभावित करेगा:

- **तनावपूर्ण राजनयिक संबंध:**
    - आरोप-प्रत्यारोप से राजनयिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है, जिससे **दोनों देशों के बीच समग्र संबंध** प्रभावित होंगे।
    - भरोसा और विश्वास **समाप्त हो सकता है, जिससे** विभिन्न द्विपक्षीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर **सहयोग करना मुश्किल हो जाएगा।**
- **सुरक्षा संबंधी निहितार्थ:**
    - खालिस्तान आंदोलन को विदेशों में भारत की संप्रभुता के लिये एक सुरक्षा जोखिम के रूप में देखा जाता है।
        - भारत ने अप्रैल 2023 में सिख अलगाववादी आंदोलन के एक नेता को कथित तौर पर **खालिस्तान की स्थापना** के लिये आंदोलन का आह्वान करने पर गिरफ्तार किया ,जिससे पंजाब में हिंसा की आशंका पैदा हो गई।
    - इससे पहले वर्ष 2023 में भारत ने **इंदिरा गांधी की हत्या को दर्शाने वाली परेड** में **झाँकी की अनुमति देने के लिये कनाडा का विरोध किया था और इसे सिख अलगाववादी हिंसा** का महिमामंडन माना था।
        - कनाडा, ब्रिटेन, अमेरिका तथा ऑस्ट्रेलिया में **भारतीय राजनयिक मिशनों पर सिख अलगाववादियों एवं उनके समर्थकों द्वारा लगातार प्रदर्शन** भारत की संप्रभुता और अखंडता के लिये खतरा बन सकता है जो कि भारत के लिये एक चिंता का विषय है।
- **व्यापार और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:**
    - व्यापार संबंधों को नुकसान हो सकता है क्योंकि ये आरोप भारत और कनाडा के बीच **व्यापारिक साझेदारी और निवेश प्रवाह को प्रभावित कर सकते हैं।**
    - बढ़ते राजनीतिक तनाव के परिणामस्वरूप, व्यवसाय में अतिरिक्त सावधानी बरत सकते हैं या अपनी भागीदारी पर पुनर्विचार कर सकते हैं।
        - भारत-कनाडा के बीच वस्तुओं का द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2022 में **लगभग 8.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया, जो वर्ष 2021 की तुलना में 25% की वृद्धि दर्शाता है।
        - सेवा क्षेत्र को द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्त्वपूर्ण योगदानकर्त्ता के रूप में ज़ोर दिया गया तथा 2022 में द्विपक्षीय सेवा व्यापार का मूल्य लगभग 6.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।
- **प्रमुख मुद्दों पर सहयोग में कमी:**
- जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद-रोधी और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा जैसी महत्त्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों पर सहयोग को लेकर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
- दोनों देशों को अपनी स्थिति को संरेखित करना और मिलकर इन साझा चिंताओं पर प्रभावी ढंग से कार्य करना चुनौतीपूर्ण लग सकता है।
- **संभावित यात्रा और लोगों पर प्रभाव:**
- बढ़ते तनाव से भारतीय और कनाडाई नागरिकों के बीच यात्रा और बातचीत प्रभावित हो सकती है, जिससे एक-दूसरे के देशों की यात्रा करना अधिक बोझिल या कम आकर्षक हो जाएगा।
- **अप्रवासन नीतियों का पुनर्मूल्यांकन:**
- ऐसे तत्त्वों को आश्रय देने के बारे में भारत की चिंताओं के जवाब में कनाडा अपनी अप्रवासन नीतियों की समीक्षा कर सकता है या उन्हें सख्त कर सकता है, खासकर खालिस्तानी अलगाववाद से जुड़े व्यक्तियों के संबंध में।
- **दीर्घकालिक द्विपक्षीय सहयोग:**
- हालिया तनाव का दीर्घकालिक द्विपक्षीय सहयोग और साझेदारी पर स्थायी प्रभाव पड़ सकता है।
- विश्वास का पुनर्निर्माण और रचनात्मक संबंध पुनः स्थापित करने के लिये पर्याप्त प्रयास एवं समय की आवश्यकता हो सकती है।
- भारत ने वर्ष 1947 में कनाडा के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किये। भारत और कनाडा के बीच साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, दो समाजों की बहु-सांस्कृतिक, बहु-जातीय एवं बहु-धार्मिक प्रकृति व दोनों देशों के लोगों के बीच मज़बूत संपर्कों पर आधारित दीर्घकालिक द्विपक्षीय संबंध हैं।

कनाडा में खालिस्तान आंदोलन और आतंकवाद का इतिहास:

- **कनाडा में प्रारंभिक खालिस्तान आंदोलन:**
    - खालिस्तान आंदोलन की जड़ें **सुरजन सिंह गिल** द्वारा वर्ष 1982 में वैंकूवर में सीमित स्थानीय सिख समर्थन के साथ **निर्वासित खालिस्तान सरकार'** के कार्यालय की स्थापना से जुड़ी हैं।
    - **पंजाब में उग्रवाद से संबंध**:
    - **वर्ष 1980 के दशक** के दौरान पंजाब में उग्रवाद का असर **कनाडा पर पड़ा।**
    - पंजाब में आतंकवाद के आरोपी तलविंदर सिंह परमार जैसे व्यक्तियों से निपटने के कनाडा के तरीके की भारत ने आलोचना की थी।
- **एयर इंडिया पर बमबारी (1985):**
    - जून 1985 में खालिस्तानी संगठन बब्बर खालसा द्वारा एयर इंडिया के विमान कनिष्क पर बमबारी के साथ कनाडा ने आतंकवाद का **क भयानक कृत्य देखा।**

भारत और कनाडा के बीच तनाव के विगत उदाहरण:

- **प्रारंभिक तनाव (1948)**:
    - इन दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण रिश्ते की शुरुआत सबसे पहले वर्ष 1948 में हुई जब कनाडा ने कश्मीर में जनमत संग्रह का समर्थन किया था।
- **वर्ष 1998 का परमाणु परीक्षण:**
    - भारत द्वारा वर्ष 1998 में किये गए परमाणु परीक्षणों के बाद कनाडा द्वारा भारत में अपने उच्चायुक्त को वापस बुलाना **इन दोनों देशों के बीच के संबंधों में कड़वाहट** का प्रतीक है।

- **हालिया स्थिति:**
  - कनाडा के प्रधानमंत्री द्वारा **किसानों के विरोध प्रदर्शन पर भारत की प्रतिक्रिया पर व्यक्त चिंता** और खालिस्तान जनमत संग्रह का समर्थन करने वाली न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ उनकी लिबरल पार्टी के गठबंधन के आलोक में दोनों देशों के बीच तनाव और बढ़ गया।

आगे की राह

- भारत सरकार को पंजाब के आर्थिक विकास में निवेश करना चाहिये और उनके लिये संसाधनों, अवसरों तथा लाभों का उचित हिस्सा सुनिश्चित करना चाहिये।
- सरकार को पंजाब में व्याप्त बेरोज़गारी, नशीली दवाओं के दुरुपयोग, पर्यावरण क्षरण और कृषि संकट की समस्याओं का भी समाधान करना चाहिये।
- भारत सरकार को खालिस्तान आंदोलन के दौरान हुई हिंसा और मानवाधिकार उल्लंघन के पीड़ितों तथा बचे लोगों के लिये न्याय सुनिश्चित करना चाहिये।
- दोनों देशों को आपसी चिंताओं और शिकायतों पर खुलकर चर्चा करने के लिये सरकार के विभिन्न स्तरों पर संवाद करना चाहिये।
- खालिस्तान मुद्दे का समाधान करने, एक-दूसरे के दृष्टिकोण को स्पष्ट करने और सर्वहित के लिये एक रचनात्मक संवाद करना चाहिये।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/the-khalistan-shadow-on-india-canada-ties